**हरियाणा का इतिहास**

भारत के इतिहास में हरियाणा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान हरियाणा सरस्वती नदी के किनारे स्थित था, जहाँ वैदिक सभ्यता की उत्पत्ति एवं विकास हुआ। यहीं पर वेदों की रचना की गई तथा यहीं पर आर्यों ने पवित्र मंत्रों का उच्चारण किया। हरियाणा का 5000 वर्षों का इतिहास मिथकों व गाथाओं से परिपूर्ण है।

मनु के अनुसार इस प्रदेश का अस्तित्व देवताओं से हुआ था इसलिए इसे ब्रह्मवर्त के नाम से पुकारा जाता है। हरियाणा को ब्रह्मवर्त के अतिरिक्त ब्रह्मर्षि व ब्रह्मा की उत्तरवेदी के नाम से भी जाना जाता है। यह भी माना जाता है कि हरियाली से हरियाणा अथवा हवण (लूटमार) हरिधानक्य या ‘आरयाना से हरियाणा शब्द बना है। कतिपय विद्वान हरि अर्थात् भगवान श्री कृष्ण से हरियाणा का सम्बन्ध जोड़ते हैं तो कुछ हर अर्थात् शंकर का क्षेत्र हरियाणा को मानते हैं।

हरियाणा के इतिहास की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से मिलती है-

1. ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण आदि से हरियाणा के वैदिक काल की जानकारी मिलती है।
2. जैन साहित्य ‘भद्रबाहुचरित’ एवं कथाकोश में प्रथम शताब्दी से तृतीय शताब्दी तक की संस्कृति के संबंध में लिखा गया है। कवि पुष्पदन्त ने ‘महापुराण’ तथा श्रीधर ने ‘पसाना चारिउ’ में हरियाणा की चर्चा की है।
3. बौद्ध साहित्य के मझिम्मनिकाय, दिव्यावदान आदि ग्रंथों में भी हरियाणा के क्षेत्रों का उल्लेख है।
4. महाभारत, अष्टाध्यायी, चतुर्माणी, हर्षचरित, महाभाष्य,राजतरंगिणी आदि ग्रंथों में कहीं न कहीं हरियाणा की चर्चा हुई है।
5. विदेशी यात्री जैसे एरियन, फाह्यान, ह्वेसांग आदि यात्रियों ने अपने यात्रा-वृतांतों में हरियाणा की ऐतिहासिक सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जानकारियां दी हैं।
6. इनके अतिरिक्त हड़प्पापूर्व सभ्यता के आभूषण व अन्य अवशेष, हड़प्पाकालीन सभ्यता के अवशेष, मौर्यकालीन स्तूप, कुषाणकालीन सोने व तांबे के सिक्के, शुंगकालीन फलक, हर्षकालीन ताम्र मुद्राएँ, यौधेय गणराज्य की मुहरें, जैन मूर्तियाँ, यौधेयकालीन सांचे, मिट्‌टी की मुहरें, अग्रेय जनपद के सिक्के, गुर्जर-प्रतिहारकालीन अभिलेख, गुप्तकालीन मुद्राएँ एवं मुगलकालीन अवशेष हरियाणा संबंधी अति महत्वपूर्ण सूचनाएँ देते हैं।

अनेक खुदाइयों से पता चला है कि सिंधु घाटी सभ्यता अथवा हड़प्पा सभ्यता तथा मोहनजोदड़ो संस्कृति यहीं विकसित हुई। भिवानी में नौरंगाबाद व मीताथल, फतेहाबाद में कुणाल, हिसार में अग्रोहा, जींद में राखीगढ़ी, रोहतक में रूखी व सिरसा में बनावली से पूर्व हड़प्पा व हड़प्पाकालीन सभ्यता के साक्ष्य मिले हैं। भारतवंश के सुदास ने हरियाणा से अपना विजय अभियान आरंभ किया तथा जल्द ही सुदूर पूर्व व दक्षिण तक आर्यों की सत्ता का विस्तार किया। इन्हीं भारतवंशियों के नाम पर सम्पूर्ण राष्ट्र का नाम भारत पड़ा। हरियाणा के कुरूक्षेत्र में महाभारत युद्ध से पूर्व श्री कृष्ण ने भगवत् गीता का उपदेश दिया। इसी मिट्‌टी पर वेदव्यास ने संस्कृत में महाभारत लिखी। इससे पूर्व सरस्वती नदी घाटी के कुरूक्षेत्र में दस राजाओं का युद्ध हुआ था। किन्तु लगभग 900 ई० पू० में महाभारत के युद्ध से इस क्षेत्र को पहचान मिली। महाभारत में इस प्रदेश को बहुधान्यक अर्थात् प्रचुर अनाज की भूमि तथा बहुधन अर्थात प्रचुर धान की भूमि कहा गया है।

हरियाणा शब्द दिल्ली के निकट साखान जिले से प्राप्त विक्रमी संवत् 1385 के एक शिलालेख से उदधृत है जिसका अर्थ है ऐसा प्रदेश जो इस धरती पर स्वर्ग के समान है। पेहोवा (कुरूक्षेत्र), तिलपुट व पानीपत से प्राप्त प्राचीन मृदभांड, मूर्तियों व गहनों से महाभारत युद्ध की पुष्टि होती है। महाभारत काल के प्रमुख स्थल थे- पूभूदक (पेहोवा), तिलप्रस्थ (तिलपुट) पानप्रस्थ (पानीपत), सोनप्रस्थ (सोनीपत) आदि।

इनके अतिरिक्त हरियाणा के कुछ शहरों के प्राचीन नाम हैं:-

|  |  |
| --- | --- |
| **वर्तमान नाम** | **प्राचीन नाम** |
| **जगाधरी** | **युगन्धर** |
| **पिंजौर** | **पंचमपुर** |
| **नारनौल** | **नरराष्ट्र** |
| **जींद** | **जयन्तपुरी** |
| **रोहतक** | **रोहिताश** |
| **सिरसा** | **शैरीषकम** |
| **कुरुक्षेत्र** | **शर्यणावत** |
| **सफीदों** | **सर्पदमन** |
| **हांसी** | **आशी** |
| **फतेहाबाद** | **इकदार** |
| **रेवाड़ी** | **रेवावाड़ी** |
| **कैथल** | **कपिलस्थल** |
| **थानेसर** | **स्थाणीश्वर** |
| **अग्रोहा** | **अग्रोदका** |
| **बहादुरगढ़** | **शरफाबाद** |
| **महेन्द्रगढ़** | **कान्नौड़** |
| **महम** | **महेस्थ** |
| **पलवल** | **अपलवा** |
| **असन्ध** | **असन्धिवत** |

महाराजा अग्रसेन ने हिसार के निकट अग्रोहा में व्यापारियों के समृद्ध नगर की स्थापना की। कहा जाता है कि जो कोई व्यक्ति इस नगर में स्थापित होना चाहता था, उसे यहाँ के प्रत्येक निवासी द्वारा एक ईट व एक रुपया प्रदान किया जाता था। इस प्रकार लाखों निवासियों की सहायता से वह व्यक्ति अपने घर का निर्माण व अपना व्यापार स्थापित कर पाता था।

आर्यकाल से ही यहां की जनता ने गण-परंपरा को स्वीकार कर लिया था। गांवों के एक समूह को जनपद कहा जाता था व जनपद की शासन व्यवस्था गाँववासियों द्वारा चुने गए प्रतिनिधि के हाथ में होती थी। अनेक जनपद मिलकर एक गण स्थापित करते थे। गणसभा के सदस्य जनपदों द्वारा भेजे गए सदस्य होते थे। इस गणसभा को लगभग सभी शासकों द्वारा मान्यता मिलती रही।

छठी शताब्दी ई० पू० में कई जनपदों की स्थापना हुई। उदाहरणार्थ, कुरू गणराज्य जिसका सम्बन्ध चन्द्रगुप्तमौर्य के साथ माना जाता है। यौधेयगण का आविर्भाव मौर्य वंश के पश्चात् हुआ। युधिष्ठिर के पुत्र  यौधेय ने यौधेयगण स्थापित किया था। ई० पू० द्वितीय शताब्दी में यौधेय गण एक बड़ी शक्ति था। पंतजलि कृत महाभाष्य में यौधेय शब्द की चर्चा हुई है। इसके अतिरिक्त जूनागढ़ के शिलालेख में भी इसका उल्लेख है। हिसार का अग्रोदक गण भी ऐसा ही उदाहरण है। कालांतर में यह गण यौधेय गण में सम्मिलित हो गया।

उत्तर भारत का प्रवेश द्वार होने के कारण हरियाणा पर हूणों, तुर्कों एवं अफगानियों ने अनेक आक्रमण किए व इस मिट्‌टी पर कई निर्णायक युद्ध लड़े गए।

छठी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के पतन के परिणामस्वरुप उत्तर भारत में अनेक छोटे-छोटे संघों का निर्माण हो गया। धीरे- धीरे स्थाणीश्वर (थानेसर) के शासक प्रभाकरवर्धन ने अनेक संघों पर नियंत्रण कर वर्धन वंश की सत्ता स्थापित की। प्रभाकरवर्धन ने दिल्ली से 150 किमी० दूर कुरूक्षेत्र के निकट स्थाणीश्वर ( थानेसर) से बैठकर ही शक्तिशाली साम्राज्य का विस्तार किया। वर्धनों ने पंजाब में हूणों का सामना कर उन्हें भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया। गुप्तों एवं गाँधारों को पराजित कर वर्धनों ने समस्त उत्तर भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।

वर्धन वंश का सबसे प्रतापी शासक हर्षवर्धन था। वह 16 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। कम आयु होने के बावजूद उसने स्वयं को विजेता एवं योग्य प्रशासक सिद्ध किया। सत्ता प्राप्त करते ही सर्वप्रथम उसने अपनी बहन को सती होने से बचाया। अपनी बहन की प्रार्थना पर उसने स्थाणीश्वर (थानेसर) व कन्नौज के साम्राज्यों को मिला लिया। हरियाणा के लिए हर्ष का युग एक समृद्धि युग था क्योंकि इस युग में स्थाणीश्वर (थानेसर) ज्ञान, विज्ञान, कला एवं संस्कृति का केन्द्र बना रहा।

हर्षवर्धन के राजकीय कवि बाणभट्ट ने अपनी कृति हर्षचरित में हर्ष के उदय एवं उसके शासन काल का विशद वर्णन किया है। बौद्ध चीनी यात्री ह्वेन्त्सांग जो बौद्ध साहित्य का अध्ययन करने एवं बौद्ध स्थलों का भ्रमण करने के लिए भारत आया था। उसने अपने यात्रा वृत्तांत सी-यू-की में हर्ष की राजधानी स्थाणीश्वर (थानेसर) के वैभव व समृद्धि का सुन्दर चित्रण किया है।

हर्ष की मृत्यु के उपरांत इस क्षेत्र पर अनेक आक्रमण हुए। 1014 ई० में महमूदगजनवी ने स्थाणीश्वर पर आक्रमण कर अनेक मूर्तियों व मंदिरों को नष्ट किया। उसे तोमर शासकों के विरोध का भी सामना करना पड़ा। तोमर शासनकाल के हरियाणा में व्यापार, कला, संस्कृति आदि की जानकारी यशस्तिलकचम्पू में मिलती है।

बारहवीं शताब्दी में चौहान शासक अर्णोराज (1131-51) ने हरियाणा पर आक्रमण कर तोमरों को पराजित किया। इसी प्रकार बीसलदेव या विग्रहराज छठे ने तोमरों से दिल्ली व हाँसी छीन लिए। अत : 12वीं शताब्दी में हरियाणा पर चौहानों का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। दिल्ली पर चौहानों ने एकाधिकार कर लिया था। 1191 ई० में दिल्ली के चौहान शासक पृथ्वी राज चौहान ने मौहम्मद गौरी को पराजित कर दिया था, किन्तु अगले ही वर्ष वह मौहम्मद गौरी के हाथों मारा गया।

1206 ई० में मौहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबुद्दीनऐबक ने भारत में गुलाम वंश की नींव डाली। 1265 ई० में गुलाम वंश के शासक बलबन ने हरियाणा के शक्तिशाली मेवों को समाप्त करने का प्रयास किया। 1290 ई० में खिलजी वंश का उदय हुआ। इस वंश के शासक अलाउद्दीनखिलजी ने अपने आर्थिक सुधारों की आड़ में जनमानस का आर्थिक शोषण किया।

तुगलक वंश के शासक फिरोजशाहतुगलक ने हिसार में फतेहाबाद नामक नगर की स्थापना अपने पुत्र फतेहखाँ के नाम पर की। उसने हरियाणा में सिंचाई हेतु अनेक नहरों का भी निर्माण कराया। वर्तमान में फतेहाबाद हरियाणा का एक जिला है।

1398 ई० में तैमूर ने भारत पर आक्रमण कर दिया। तैमूर विजयी होते हुए घग्घर नदी के साथ -साथ हरियाणा में प्रविष्ट हुआ। उसने हरियाणा में काफी सम्पत्ति लूटी । सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, करनाल, कैथल, अगध, तुगलकपुर तथा सालवान आदि के पश्चात्पानीपत में उसने खूब लूटपाट की।

1526 ई० में पानीपत के प्रथम युद्ध में मुगल शासक बाबर एवं इब्राहीम लोदी आपस में टकराए। इसमें बाबर विजयी रहा तथा उसने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली। पानीपत के पश्चात् बाबर ने सरलतापूर्वक दिल्ली पर भी अधिकार कर लिया।

1504 ई० में शेरशाह ने बाबर के पुत्र हुमायूँ से हरियाणा को छीन लिया। शेरशाह ने कतिपय आर्थिक सुधार भी किए जिनसे किसानों की दशा में सुधार हुआ। शेरशाह की मृत्यु के उपरान्त हुमायूँ ने पुन : इस प्रदेश पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ के पुत्र अकबर के शासनकाल के दौरान हेमचन्द्र (हेमू) रेवाड़ी का शासक था। वह अकबर के सबसे बड़े शत्रुओं में से एक था। पानीपत के द्वितीय युद्ध (1556 ई०) में अकबर के जनरल बैरमखाँ तथा मोहम्मद आदिल शाह ने हेमू को  पराजित कर दिया। अकबर के उपरान्त शाहजहाँ और औरंगजेब ने हरियाणा प्रदेश पर शासन किया। औरंगजेब की धार्मिक बर्बरता के कारण नारनौल में सतनामियों ने उसका प्रबल विरोध किया। 3 मार्च, 1707 को औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् धीरे-धीरे मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। 1753 से 1757 ई० तक हरियाणा मराठों के अधीन रहा।

1761 ई० में विदेशी आक्रांता अहमद शाह अब्दाली तथा मराठा शासकों के मध्य पानीपत का तीसरा युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में मराठों की पराजय से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में विस्तार करने का अवसर मिल गया। अहमद शाह अब्दालीअपने देश लौटते समय हरियाणा का उत्तरी भाग अम्बाला, जींद, कुरूक्षेत्र, करनाल, सरहिन्द के गवर्नर जैन खाँ को सौंप गया।

सन् 1798 में लॉर्ड वेलेजली ईस्ट इंडिया कंपनी का गवर्नर बनकर आया और उसने अपने विस्तारवादी योजना को मूर्त रूप देना आरंभ किया। वर्ष 1803 में हरियाणा व दिल्ली कंपनी के शासन के अधीन आ गए। 30 सितम्बर, 1803 को सर्जी अर्जन की सन्धि के अन्तर्गतदौलतरावसिन्धिया ने अंग्रेजों को अपने अधिकृत क्षेत्रों के अतिरिक्त हरियाणा भी दे दिया।

हरियाणा में गुड़गाँव के मेव, अहीर व गूजरों ने, रोहतक के जाटों और संघड़ों ने, हिसार के विश्नोई और जाटों, करनाल व कुरूक्षेत्र के राजपूत, रोड, सैनी और सिखों ने अंग्रेजों का प्रबल विरोध किया था। अन्तत: 1809-1810 तक अंग्रेजों ने समस्त हरियाणा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया|

ईस्ट इंडिया कंपनी की शोषणकारी गतिविधियों के विरूद्ध हरियाणा की जनता में अत्यधिक असंतोष था। अत : 1857 ई० में यह असंतोष क्रांति के रूप में फूट पड़ा। इस क्रांति के अनेक कारण थे जिनमें से मुख्य था सेना में एनफील्डरायफल का प्रयोग। इसके कारतूस में गाय व सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता था। रायफल में डालते समय इस कारतूस को मुँह से काटना पड़ता था। यह खबर तीव्रता से सैनिकों में फैली। परिणामस्वरूप 1857 ई० की क्रांति हुई। इन कारतूसों ने हिन्दू व मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को भारी क्षति पहुँचाई थी।

भारतीय सैनिकों ने इस विषय पर अंग्रेज उच्च अधिकारियों से भी अपील की थी, किंन्तु इसका कोई लाभ नहीं हुआ। अत: योजनागत रूप से भारतीय सैनिकों ने 10 मई, 1857 ई० को अम्बाला में विद्रोह कर दिया। 11 मई,1857 को मेरठ में इस चिंगारी ने क्रांति को हवा दी, परिणामस्वरूप मेरठ सहित सम्पूर्ण उत्तर भारत विद्रोह की ज्वाला में जल उठा। बल्लभगढ़ के राजा नाहन सिंह ने दिल्ली में क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया। 1857 के विद्रोह में जिन सिपाहियों ने भाग लिया उनमें से अधिकतर हरियाणा के गुड़गांव, रोहतक व हिसार जिले के थे। हरियाणा के रामकृष्ण गोपाल मेरठ विद्रोह के दौरान मेरठ के नायब कोतवाल थे। जींद, कलसिया, बुड़िया जैसी देसी रियासतों एवं अम्बाला व थानेसर के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर सम्पूर्ण हरियाणा विद्रोह की ज्वाला में जल रहा था। साम्प्रदायिक सहयोग व एकता इस विद्रोह की विशेषता थी। जून, 1857 तक लगभग संपूर्ण हरियाणा ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र हो चुका था।

1857 की क्रांति के कुछ महान क्रान्तिकारी थे-राव तुलाराम (रेवाड़ी), नाहर सिंह (वल्लभगढ़), मिर्जा मुनीरबेग (हाँसी), मोहनसिंह (माधोपुर), अचूर्रहमानखाँ  (स्तर), नवाब अहमद अली गुलाम खां (फर्रूखनगर), नवाब नूर समन्दखाँ (रानिया सिरसा), राव किशन गोपाल (नंगल पठानी), लाला हुकुमचन्द जैन (हाँसी), नवाब बहादुर जंग खाँ (बहादुरगढ़) ।

6 माह में अंग्रेज पुन: अपनी सत्ता स्थापित करने में सफल हुए।  हरियाणा की जींद रियासत ने 1857 की जन-क्रांति मैं अंग्रेजों को महत्वपूर्ण सहयोग दिया। देसी रियासतों की सहायता से अंग्रेजों ने विद्रोहियों/क्रांतिकारियों को क्रूरतापूर्वक कुचल दिया।

राय बहादुर मुरलीधर के प्रयास से 1886 ई० में अम्बाला में कांग्रेस की एक शाखा स्थापित हुई। लाला लाजपत राय ने 1887 ई० में हिसार में कांग्रेस की शाखा बनाई। 12 अक्टूबर, 1888 ई० के दिन रोहतक में काँग्रेस की प्रथम सार्वजनिक सभा आयोजित की गई। इस सभा की अध्यक्षता तुर्राबाजखाँ ने की। राय बहादुर मुरलीधर, लाला लाजपत राय, शादी लाल, दुनीचन्द, बालमुकुन्द गुप्त, छबीलदास, दीन दयाल शर्मा, गौरी शंकर, चूड़ामणि आदि नेताओं ने कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया।

सामाजिक क्षेत्र में हिसार के लाला लाजपत राय ने आर्य समाज को समर्थन दिया वहीं झज्जर के पं. दीन दयाल शर्मा ने सनातन धर्म को लोकप्रिय बनाया। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने जिला हिसार को अपना राजनीतिक व सामाजिक कार्यक्षेत्र बनाया। उनकी बढ़ती लोकप्रियता को देख पंजाब के उपराज्यपाल डेरिल अष्टसन के कहने पर भारत के वायसराय मिन्टो ने अंतत: 9 मई, 1907 ई० को देश से निर्वासन का आदेश देकर माण्डले (म्यांमार) भेज दिया। सम्पूर्ण हरियाणा में विरोध के फलस्वरूप अंग्रेजों ने 14 नवम्बर, 1907 ई० को उन्हें रिहा कर दिया। हरियाणा के प्रसिद्ध पत्रकार बालमुकुन्द गुप्त ने इस काल में अंग्रेजों पर अपनी लेखनी द्वारा तीव्र प्रहार किये हैं।

1909 ई० के मार्ले -मिंटो सुधारों के अन्तर्गतरोहतक, हिसार तथा गुड़गांव क्षेत्र से हिसार के रायबहादुर जवाहरलाल भार्गव, करनाल से मौलवी अचूल गनी पंजाब विधानसभा के लिए चयनित हुए। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान हरियाणा में नेकीराम शर्मा, तिलक आदि ने अंग्रेजी सेना में सैनिक भर्ती का विरोध किया था। रोलेटएक्ट का विरोध करने के कारण 8 अप्रैल, 1919 के दिन गाँधीजी को हरियाणा के पलवल में गिरफ्तार कर लिया गया था। उनकी गिरफ्तारी से पूरे हरियाणा में शोक था।  4 सितम्बर, 1920 को कोलकाता में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया। इस आन्दोलन के लिए पहली सभा पानीपत में तथा उसके पश्चात भिवानी  में आयोजित की गई।

1923 ई० में फजली हुसैन व चौधरी छोटूराम ने पंजाब में ‘पंजाब युनियनिस्ट पार्टी’ की स्थापना की। कालांतर में यूनियनिस्ट पार्टी ने हरियाणा के राजनीतिक इतिहास में सक्रिय भूमिका निभाई। यूनियनिस्ट पार्टी को लोकप्रिय बनाने के लिए चौधरी छोटूराम ने जमींदारीलीग नामक जोरदार अभियान भी चलाया। 1937 ई० के चुनाव में सिकन्दर हयात के नेतृत्व में यूनियनिस्ट पार्टी ने पंजाब (हरियाणा सम्मिलित) में सरकार बनाई। 1942 ई० में हरियाणा के कोने-कोने में भारत छोड़ो आदोलन छेड़ा गया। आजाद हिन्द फौज के शूरवीर मेजर सूरजमल ने मणिपुर की भूमि पर पहला तिरंगा लहराया।

1947 ई० में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो हरियाणा पंजाब में सम्मिलित था। कुछ ही वर्षों में हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों को यह अनुभव होने लगा कि पंजाब में उनकी उपेक्षा की जा रही है। 1955 ई० में भारत सरकार द्वारा गठित राज्य पुनर्गठन आयोग ने पंजाब विभाजन को अस्वीकार कर दिया। साथ ही यह भी सिफारिश की कि पटियाला व पूर्वी पंजाब के इस भाग को पंजाब क्षेत्र तथा महेन्द्रगढ़ व जीन्द को हरियाणा क्षेत्र में शामिल कर लिया जाए।

इससे पूर्व 1925 ई० में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के पीरजादा मुहम्मद हुसैन ने हरियाणा को पंजाब से पृथक कर दिल्ली में सम्मिलित करने की माँग की थी। 1928 ई० में काँग्रेस ने भी कुछ ऐसी ही माँग की थी। 1948 ई० में सहसा मास्टर तारा सिंह ने अपने समाचार पत्र अजीत में सिख राज्य की माँग की जिससे हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुँची।

वर्ष 1965 में भारत सरकार ने लोकसभा अध्यक्ष सरदार हुक्म सिंह की अध्यक्षता में पंजाब विभाजन पर विचार करने के लिए एक संसदीय समिति का गठन किया। समिति की सिफरिश के आधार पर 1966 ई० में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जे. सी. शाह की अध्यक्षता में पंजाब सीमा आयोग का गठन किया गया। आयोग द्वारा सीमांकन के आधार पर सातवें संविधान संशोधन द्वारा हरियाणा राज्य का गठन किया गया।

1 नवंबर, 1966 को देश के सत्रहवें राज्य के रूप में हरियाणा का जन्म हुआ। संयुक्त पंजाब का 35.18 प्रतिशत भाग हरियाणा में आया। श्री धर्मपाल को हरियाणा का प्रथम राज्यपाल नियुक्त किया गया। पंजाब विधानसभा से हरियाणा के विधायकों को पृथक कर हरियाणा विधानसभा का गठन किया गया। विधानसभा में कांग्रेस सदस्यों द्वारा पं. भगवत दयाल शर्मा को अपना नेता चुना गया। अत: बहुमत का समर्थन प्राप्त कर पं. भगवत दयाल शर्मा हरियाणा के प्रथम मुख्यमंत्री बन गए।

नवंबर, 1966 में हरियाणा में 7 जिले थे। इनमें करनाल, अम्बाला, रोहतक, गुड़गाँव, महेन्द्रगढ़, जींद व हिसार शामिल थे। कालांतर में नए जिलों का निर्माण होता गया, फलस्वरूप हरियाणा में जिलों की संख्या 21 तक पहुँच गई है। 15 अगस्त, 2008 को पलवल हरियाणा का 21वां जिला बना।

आज हरियाणा की गिनती भारत के विकसित राज्यों में की जाती है, जिसका खाद्यान्न उत्पादन 178 लाख टन प्रतिवर्ष से भी अधिक है तथा इसके अनेक जिले जैसे गुड़गांव, पानीपत, अम्बाला, हिसार, बहादुरगढ़ आदि औद्योगिक केन्द्र बन चुके हैं।